

भक्तिकालीन निर्गुण राम साहित्य का स्वरूप और विकास

हिंदी साहित्य में निर्गुण काव्य धारा राम, अगोचर के रूप में आराध्य रूप में जाना जाता है। यह निर्गुण शाखा का राम है, इसकर के निराकार अवतार की आराधना करता। हमें निर्गुण शाखा ईश्वर के अगोचर रूप को दृष्टांत के रूप में वर्णित करनेवाली, विश्वसनीय है। इस शाखा के अनुयायियों (भक्तों) को जानयोगी पा फिर ज्ञानमार्गी और विरक्त यह। निर्गुण शाखा ईश्वर के निराकार अवतार की आराधना करती है। इस निर्गुण निर्गुण शाखा को वाणी का सृष्टि का स्वरूप रूप बताते हैं। दूसरी शाखा के कवियों का वर्णन अवतारवाद, जाति पीढ़ी, आडंबर आदि का विरोध किया है।

शब्द के दो स्वरूप हैं - निर्गुण व सगुण

निर्गुण भक्ति में ईश्वर को घट-घट का स्वामी माना गया है। इस भक्ति में गुरु का एक विशेष महत्व है। शब्द भक्ति मानव को एक ऐसे विश्वव्यापी धर्म से जोड़ती है, जहाँ जाति-पाँति, छुआछूत, वर्ण भेद नहीं होता। इस भक्ति में सहज साधना को महत्व है।

निर्गुण भक्ति का मार्ग ज्ञानमार्गी है। रहस्यवाद भी निर्गुण साधना पर आश्रित है। रहस्यवाद माधुर्य भाव की निर्गुण भक्ति है। यह भक्ति कर्तृष्णा, कर्मकांड इत्यादि बाह्याडंबरों का विरोध करके ईश्वर के निराकार रूप से भक्ति करने, उससे तादात्म्य होने व ज्ञान एवं प्रेम के द्वारा उसे प्राप्त करने पर बल देती है।

इस आलोचक ईश्वर की प्राप्ति करने पर बल देती है। प्रेम के बिना भक्ति संभव ही नहीं है। इसकी।

निर्गुण भक्ति की अभिव्यक्ति सबसे पहले हिंदी में संत, नामदेव (13वीं शती) की रचनाओं में मिलती है। इन्होंने इसे भक्ति मार्ग की ओर संकेत किया था जो हिंदू और मुसलमान दोनों सम्प्रदायों के लिए ग्रहण करने योग्य था। नामदेव को बिठला का भक्त भी माना जाता है।

निर्गुण संत साहित्य विशेषताएँ

निर्गुण संत साहित्य की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं:

1. गुरु का महत्व।
2. ईश्वर में विश्वास।
3. रूढ़ियों का विरोध।
4. विषय-वासनाओं के प्रति विरक्ति।
5. बाह्याचारों का विरोध।
6. मूर्तिपूजा का विरोध।
7. विश्व मानवतावाद की स्थापना।
8. बाह्य आडम्बरों का विरोध।
9. अवतारवाद का विरोध।
10. निराकार ईश्वर की उपासना।
11. आत्मा तथा परमात्मा के विशुद्ध मिलन की चिंतन।
12. रहस्यवाद की भावना।
13. निश्छल धार्मिक सहिष्णुता का आभाव।
14. सामाजिक कुरीतियों का विरोध।
15. ब्रज और सधुक्कड़ी भाषा का प्रयोग।
16. प्रतीकों का प्रयोग।
17. शिक्षा का आभाव।

निर्गुण संत साहित्य का विकास

निर्गुण भक्ति की शाखाएँ

निर्गुण भक्ति की शाखाओं को दो भागों में विभाजित किया गया है:

1. सन्त काव्यधारा/ज्ञानमार्गी धारा
2. सूफी काव्यधारा/प्रेममार्गी धारा

निर्गुण काव्यधारा की भी दो शाखाएँ बनीं - ज्ञानाश्रयी शाखा और प्रेमाश्रयी शाखा। ज्ञानाश्रयी शाखा को संतों ने पोषित किया और नतीजा यह हुआ कि काव्य की यह धारा जन-जन के जीवन को पवित्र करने में सफल सिद्ध हुई। आप अध्यापन वृत्ति से जुड़ गए। लेखन कुशलता आप में अध्ययन काल से ही रही है।

देश में 14-17 वीं शताब्दी तक भक्ति की दो धाराएँ - निर्गुण और सगुण समानान्तर रूप से चलती रहीं। इसमें रचनाकाल की दृष्टि से सबसे पहले कबीर की विस्तृत रचनाएँ प्राप्त होती हैं। ज्ञान और प्रेम की प्रधानता के आधार पर निर्गुण काव्य धारा की दो शाखाएँ हैं - ज्ञानाश्रयी शाखा, जिसे सन्त काव्य भी कहते हैं और प्रेमाश्रयी शाखा, जिसे सूफी काव्य भी कहते हैं।

1. ज्ञानाश्रयी शाखा

ज्ञानाश्रयी शाखा के कवि परम सत्ता के अस्तित्व को स्वीकार तो करते हैं, लेकिन अवतार और लीला में विश्वास नहीं करते। उनका ईश्वर निर्गुण, निराकार, निरंजन, अरूप, अगम, अगोचर है। कबीर ने स्पष्ट कहा -

दशरथ सुत तिहुँ लोक बखाना,
राम नाम का मरम है आना।

अवतार को न मानने के बावजूद ज्ञानाश्रयी शाखा के सन्त परम सत्ता के साथ अनेक प्रकार के सम्बन्ध बना लेते हैं। कबीर कहते हैं -

2. प्रेमाश्रयी शाखा

प्रेमाश्रयी शाखा को 'सूफी काव्य' के नाम से भी जाना जाता है। इस्लाम के सूफी मत से प्रभावित होते हुए भी हिन्दी का सूफी काव्य कुछ मायने में भिन्न भी है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इसकी विशेषता बताते हुए कहा - "इनकी रचना बिलकुल भारतीय चरित-काव्यों की संवाद शैली पर न होकर फारसी की मसनवियों के ढंग पर हुई है।"

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का मानना है - "पद्मावत आदि सूफी प्रेमाख्यानक भारतीय साहित्य में प्राचीन काल से चले आ रहे वासवदत्ता, रत्नावली, कुवलयमाला आदि लोक-प्रचलित नायिकाओं के आधार पर लिखे हुए 'रोमांस' कही जाने वाली कृतियों की परम्परा से ओत-प्रोत है।" सूफी कवियों ने लौकिक एवं कल्पित प्रेम-कथाओं के माध्यम से 'प्रेम-तत्त्व' का महत्व बताया है। उनकी काव्य पद्धति में संस्कृत-प्राकृत के प्रेमाख्यानकों और फारसी की मसनवियों का अनुसरण किया गया है। हिन्दी के सूफी कवियों में मुल्ला दाऊद - (चन्द्रायन, सन् 1379), मलिक मुहम्मद जायसी (पद्मावत, सन् 1520)। मुल्ला दाऊद (चन्द्रायन, सन् 1379) और मलिक मुहम्मद जायसी (पद्मावत, सन् 1520) जैसे सूफी कवियों ने अपनी रचनाओं में लौकिक और अलौकिक प्रेम के माध्यम से ईश्वर के साथ तादात्म्य स्थापित करने की कोशिश की। उन्होंने प्रेम को ही ईश्वर तक पहुंचने का मार्ग माना और इस प्रकार सूफी काव्यधारा ने भारतीय भक्ति साहित्य में एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया। इस प्रकार, निर्गुण काव्यधारा का विकास दो प्रमुख शाखाओं - ज्ञानाश्रयी और प्रेमाश्रयी - में हुआ। दोनों शाखाओं ने अपने-अपने तरीके से निर्गुण ईश्वर की उपासना को साहित्य में अभिव्यक्त किया और समाज में भक्ति भावना का प्रसार किया।